भाग 2

कक्षा 12 के लिए हिंदी (ऐच्छिक) की पाठ्यपुस्तक

अंतरा

भाग 2

कक्षा 12 के लिए हिंदी (ऐच्छिक) की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण

दिसंबर 2009 पौष 1931
जनवरी 2012 माघ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
मार्च 2015 फाल्गुन 1936
दिसंबर 2016 पौष 1938
नवंबर 2017 अग्रहायण 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941

PD 45T RSP

₹ 85.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा मैज़िक इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड, 26-ई, सेक्टर-31, इंडस्ट्रियल साइट-IV, ग्रेटर नोएडा, जी.बी. नगर (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-661-6

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
संपादक : *मरियाम बारा*
उत्पादन सहायक : *मुकेश गौड़*

आवरण
जोएल गिल

सज्जा एवं चित्रांकन
भूषण शालिग्राम

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल- केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार

और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन सी ई आर टी इस पुस्तक की रचना के लिए बनायी गयी पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर अशोक वाजपेयी और सुश्री शोभा वाजपेयी की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनीटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एनसीईआरटी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

पाठ्यपुस्तक के बारे में

यह पाठ्यपुस्तक 12वीं कक्षा में ऐच्छिक हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। यह पाठ्यपुस्तक दो खंडों में विभक्त है। कविता खंड में ग्यारह कवियों की रचनाओं को शामिल किया गया है। कविता की समझ का होना साहित्य की समझ का प्रमाण है। पाठ्यपुस्तक में कविता खंड को पहले इसलिए रखा गया है जिससे विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि, सौंदर्य बोध और सराहना का भाव विकसित हो। वे स्वयं उसकी महत्ता और उपयोगिता को समझ सकेंगे तथा कुछ सृजन कर सकेंगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक में पाठों का क्रम भाषा, शिल्प और शैली के आधार पर सरल से कठिन की ओर निर्धारित किया गया है। इस पुस्तक में पहले आधुनिक हिंदी कवियों की कविताएँ दी गई हैं और बाद में मध्यकालीन कवियों की। इस खंड में सबसे पहले प्रसाद और निराला को रखा गया है और उनकी उन कविताओं को चुना गया है जो अपने कथ्य में गहन और गंभीर होने के बावजूद अपनी अभिव्यंजना में सहज और संप्रेषणीय हैं। इसके बाद अज्ञेय और केदारनाथ सिंह की दो-दो कविताएँ इस पुस्तक में शामिल की गई हैं जो अपने शैली और शिल्प में तो सहज हैं लेकिन उनका कथ्य गंभीर, दार्शनिक और चिंतन प्रधान हैं। विष्णु खरे और रघुवीर सहाय की दो-दो कविताएँ इस पुस्तक में हैं। ये दोनों ही कवि सामाजिक विद्रूप को व्यंग्यात्मक शैली में अभिव्यक्ति देने वाले हैं। उनकी ये कविताएँ आधुनिक समाज के दोमुँहेपन और विद्रूप को प्रकट करती हैं। यदि क्रम की दृष्टि से देखा जाए तो प्रसाद से लेकर रघुवीर सहाय तक जो कविता-क्रम इस खंड का है उससे यह स्पष्ट होता है कि भाव, शिल्प और कथ्य की दृष्टि से सभी कविताएँ अपनी-अपनी जगह पर अनूठी हैं। साथ ही हिंदी कविता की विकास-यात्रा में काव्य-वस्तु, काव्य-शिल्प में जो परिवर्तन आए हैं, वे किस तरह के हैं। इस बात का भी पता चलता है।

मध्यकालीन साहित्य (भक्तिकाल और रीतिकाल) से पाँच कवि चुने गए हैं– तुलसी, जायसी, विद्यापति, केशवदास और घनानंद। इन कवियों के पाठ चयन में क्रम और पठनीयता को महत्त्व दिया गया है। सबसे पहले तुलसी हैं जिनके 'रामचरितमानस' और 'गीतावली' से वे छंद चुनकर रखे गए हैं जिनमें भावों की मार्मिक स्थितियाँ और सीधी अभिव्यंजना है। रामचरितमानस का भरत-राम संवाद ऐसे ही भावोद्वेलन का अंश है जहाँ भाषा की तद्भवता रुकावट नहीं डालती। भावों का प्रवाह पाठक के अंतर्मन को छू लेता है। गीतावली के अंश भी इसी तरह के हैं। जायसी के 'बारहमासा' से चार छंद चुने गए हैं। पारंपरिक कविता में ऋतु परिवर्तन और विप्रलंभ श्रृंगार का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। चारों छंद, उत्प्रेरणा और भाव-प्रवणता से ओत-प्रोत हैं। ऐसी ही बात

विद्यापति और घनानंद के छंदों के बारे में कही जा सकती है। उनमें भी प्रेम की पीड़ा बिना किसी लाग-लपेट के व्यक्त है। अत: इनके भाव ग्रहण में कोई कठिनाई नहीं आती। केशवदास के छंद उनकी अपनी शैली के उदाहरण हैं और तीनों छंद अलग-अलग रंग और आस्वाद के हैं।

मध्यकालीन कविताओं के इस चयन से अवधी और ब्रज-इन दो प्रमुख मध्यकालीन काव्य भाषाओं की अभिव्यंजना शक्ति का पता चलता है। चुने गए पाठ भी उन्ही संदर्भों को ध्यान में रख कर दिए गए हैं जिनसे कोई भी भारतीय प्राय: पूर्व परिचित होता है। कविता का क्रम सरल से कठिन की ओर है क्योंकि 'आधुनिक कविता' भाषा की दृष्टि से विद्यार्थी के लिए ज़्यादा उपयुक्त समझी जाती है।

पाठ्यपुस्तक के पाठों का चयन 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की उम्र, रुचि, और योग्यताओं के आधार पर किया गया है। अत: विविध विषयों (विषयवस्तु), साहित्य विधाओं के आधार पर पाठ का चयन किया गया है। पुस्तक में कहानी है तो लघु कहानी भी, आलोचनात्मक निबंध है तो विचार प्रधान निबंध भी, यात्रावृत्तांत हैं तो संस्मरण भी, संस्मरण है तो आत्मकथा भी। ठीक उसी तरह कविताओं में आधुनिक है तो प्राचीन भी, प्रगतिवादी है तो प्रयोगवादी भी, छायावादी है तो समकालीन भी। कविता चयन में गेयता का भी ध्यान रखा गया है विविधता और आस्वाद तो है ही।

यह कोशिश की गई है कि विद्यार्थी हिंदी भाषा एवं साहित्य पढ़कर उसका आनंद लें तथा इस दिशा में पढ़ने-लिखने तथा आगे बढ़ने को उत्सुक हों। विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य के प्रति जिज्ञासा पैदा करना भी पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य है। ज्ञान और शिक्षा की दुनिया पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, अध्यापक की भूमिका सर्वोपरि है। वह उसे अन्य ज्ञानानुशासनों से जोड़कर, समकालीन समस्याओं-विमर्शों से जोड़कर रोचक बना सकता है।

गद्यखंड में हिंदी की विभिन्न गद्य विधाओं का प्रतिनिधित्व है, जिनमें निबंध, कहानी तथा आलोचनात्मक निबंध है और प्रमुख गद्य विधाओं के अंतर्गत आत्मकथा, संस्मरण और यात्रावृत्तांत हैं। गद्यखंड में कुल दस पाठ रखे गए हैं, जिन्हें हिंदी के मूर्धन्य गद्यकारों ने रचा है। गद्य पाठों का क्रम भी सरल से कठिन की ओर ही रखा गया है। इतिहास क्रम के स्थान पर पाठों की रचनात्मकता एवं बुनावट को प्रधानता दी गई है। इस क्रम में रामचंद्र शुक्ल का निबंध 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' प्रेमघन की स्मृति में लिखा गया है जो अत्यंत मनोरम शैली में है। इस रचना में शुक्ल जी अपने जीवन के बाल्य काल को पाठक के साथ बाँटते से लगते हैं। उनकी भाषा में न कोई उलझाव है न जटिलता, बीच-बीच में हास्य और व्यंग्य की छौंक इस पाठ को बार-बार पढ़ने को प्रेरित करती है। उसी तरह गुलेरी जी के 'सुमिरिनी के मनके' के तीन छोटे-छोटे अंश भी अत्यंत पठनीय हैं। जबकि इनके भीतर तीन गहरी सामाजिक चिंताएँ निहित हैं। ब्रजमोहन व्यास का 'कच्चा चिट्ठा' एक स्वप्नदर्शी व्यक्ति का कच्चा चिट्ठा है जिसने अपने विजन से एक राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था का निर्माण किया है। एक आदमी अपने व्यक्तित्व तथा कार्य कुशलता से किस तरह किसी बड़े उद्देश्य

की पूर्ति कर सकता है, यह पाठ उसी का कच्चा चिट्ठा है। रेणु की एक कहानी 'संवदिया' भी इस पाठ्यपुस्तक में हैं। जिस कथा धारा का प्रारंभ प्रेमचंद के यहाँ होता है उसका विकास रेणु के यहाँ मिलता है। रेणु आंचलिकता के द्वारा जाने जाते हैं। संवदिया के माध्यम से रेणु ने ग्रामीण समाज की आंचलिकता, लोक-संस्कृति तथा लोक-जीवन की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। 21वीं सदी की चकाचौंध तथा भोग और उपभोग की संस्कृति के बीच गाँव अभी भी संस्कृतियों का रक्षक है। मानवीय रिश्तों की जो झलक गाँव में मिलती है शहर उससे कोसों दूर हैं।

'गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात' भीष्म साहनी की आत्मकथा 'आज के अतीत' का अंश है जिसमें भीष्म साहनी ने गांधी और नेहरू के साथ बिताए निजी क्षणों का मार्मिक उल्लेख किया है। यास्सर अराफात के साथ बिताए निजी क्षणों को अंतर्राष्ट्रीय मैत्री जैसे मूल्यों में रूपातंरित किया है। यूँ तो ऐसे क्षण बहुत लोगों के जीवन में आते हैं, किंतु कम लोग हैं जो उसे लिपिबद्ध कर देश और समाज के सामने रख पाते हैं।

पुस्तक में ही समकालीन कहानीकार असगर वजाहत की 'चार लघु कथाएँ' दी गई हैं जिसमें लेखक ने व्यवस्था, शासन-तंत्र, शोषण, मजदूरों—किसानों की समस्या आदि पर करारी चोट की है। उन्होंने यह दिखाया है कि किस तरह शोषण-तंत्र मजदूरों और किसानों के संघर्ष को कुचलने पर आमादा हैं।

इसके बाद निर्मल वर्मा का यात्रावृत्तांत 'जहाँ कोई वापसी नहीं' दिया गया है। पाठ में औद्योगीकरण एवं विकास के नाम पर पर्यावरण-विनाश संबंधी चिंता प्रकट की गई है। साथ ही आदिवासियों के विस्थापन-दर-विस्थापन से उपजी समस्या ने आदिवासियों के जन-जीवन को उनके परिवेश और संस्कृति से काट दिया है। लेखक की चिंता है कि औद्योगीकरण और विकास का मॉडल आयातित नहीं, अपने देश की ज़रूरत के अनुसार होना चाहिए। औद्योगीकरण के लिए पर्यावरण का विनाश नहीं किया जाना चाहिए और न ही पुनर्वास के लिए विस्थापन किया जाना चाहिए। लेखक की यह चिंता पूरे देश एवं समाज की चिंता है।

'यथास्मै रोचते विश्वम्' में रामविलास शर्मा ने लेखक की सामाजिक प्रतिबद्धता को रेखांकित किया है। उनका मानना है कि सामाजिक प्रतिबद्धता ही साहित्य की कसौटी है। इसके बिना न सामाजिक परिर्वतन संभव है और न ही भावी विकास। साहित्य इन दोनों दिशाओं में कारगर हो सकता है बशर्ते साहित्यकार इसका ध्यान रखें।

ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्त्व और उसकी गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती है। कहानी से यह सिद्ध होता है कि प्रेम के लिए किसी नियत व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वतः घटित हो जाता है। 21वीं सदीं में भोग और उपभोग की संस्कृति ने प्रेम का स्वरूप अधिकतर उच्छृंखल कर दिया है। वैसी स्थिति में प्रेम की उच्छृंखलता से अलग यह कहानी प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित करती है।

पुस्तक में अंतिम पाठ हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'कुटज' दिया गया है जिसमें लेखक ने स्वावलंबन, आत्मविश्वास जैसे मूल्यों को कुटज के माध्यम से स्थापित किया है, जिससे दुख, निराशा, अवसाद, अंहकार, भय और आतंक पर विजय पाई जा सकती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठों के अतिरिक्त, लेखक/कवि परिचय, प्रश्न–अभ्यास, योग्यता–विस्तार आदि क्रियाकलाप दिए गए हैं जिससे पाठों को आसानी से खोला जा सके, बाहर के ज्ञान से जोड़ा जा सके, विद्यार्थी के अर्जित ज्ञान का भाषा–साहित्य के साथ उपयोग हो सके तथा विद्यार्थी में भाषा और साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न हो सके।

आशा है विद्यार्थियों की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों के विकास की दृष्टि से यह पाठ्यपुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक में संशोधन और परिष्कार के लिए आप की प्रतिक्रिया एवं सुझाव का हम स्वागत करेंगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे एन यू , नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व प्रो.फ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे एन यू नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रो.फ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी, नयी दिल्ली

सदस्य

कमला प्रसाद, *पूर्व उपाध्यक्ष,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

किरन गुप्ता, *पी.जी.टी.* (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय, आई एन ए, नयी दिल्ली

चंद्रकांत देवताले, *कवि एवं साहित्यकार,* उज्जैन, मध्य प्रदेश

नज़ीर मोहम्मद, *प्रो.फ़ेसर* (अवकाश प्राप्त), अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़

नीलम शर्मा, *पी.जी.टी.* (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली कैंट, नारायणा, नयी दिल्ली

प्रेमलता जैन, *रीडर,* अरविंदो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय नयी दिल्ली

मंजुला माथुर, *प्रो.फ़ेसर,* केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एनसीईआरटी, नयी दिल्ली

मंजुरानी सिंह, *पी.जी.टी.* (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू परिसर, नयी दिल्ली

महेंद्रपाल शर्मा, *प्रो.फ़ेसर एवं अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

रचना भाटिया, *प्रवक्ता,* राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नयी दिल्ली

रतन कुमार पांडेय, *अध्यक्ष हिंदी विभाग,* मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

रमेश तिवारी, *पूर्व प्रवक्ता,* कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

रोहिताश्व, *प्रो.फ़ेसर एवं डीन,* गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

सत्यकाम, *प्रो.फ़ेसर,* मानविकी विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

लालचंद राम, *प्रो.फ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् निगरानी समिति द्वारा नामित अशोक वाजपेयी और सुश्री शोभा वाजपेयी की आभारी है। पुस्तक–निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित प्रोफ़ेसर दिलीप सिंह, कुलसचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नै का आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तक में रचनाओं को शामिल करने के लिए जिन रचनाकारों और उनके परिजनों से अनुमति मिली है, हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक; *कॉपी एडीटर* दिग्विजय सिंह अत्री एवं सुप्रिया गुप्ता; *प्रूफ रीडर* कंचन शर्मा; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* जय प्रकाश राय और सचिन कुमार के हम आभारी हैं।

विषय-सूची

गद्य खंड